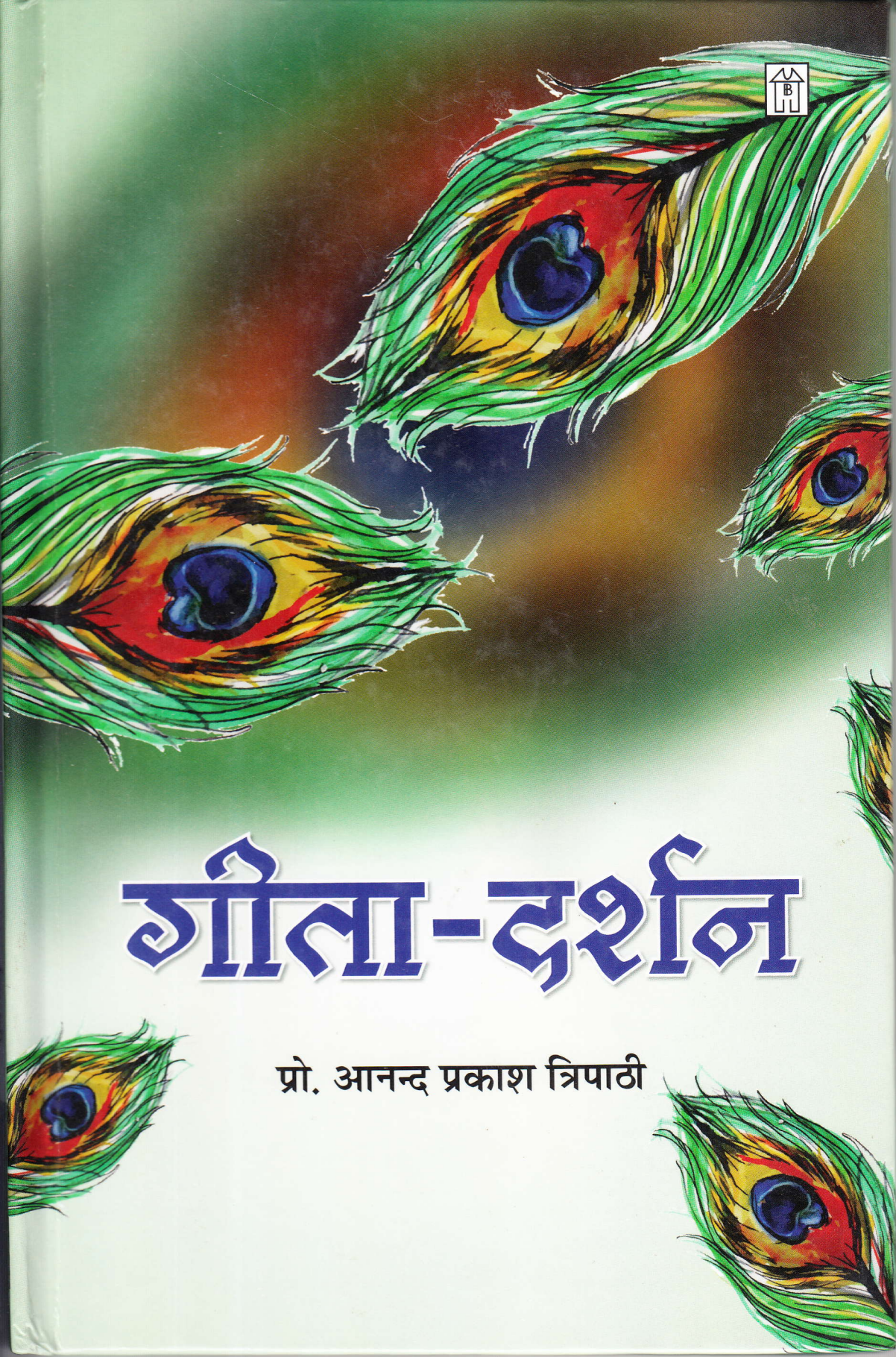

गीता-दर्शन

प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

गीता - दर्शन

प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

एम.ए. (दर्शन, इतिहास) पीएच.डी.
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय
लाडनूं–341306

यूनिवर्सिटी बुक हाउस (प्रा) लि.
जयपुर

प्रकाशक:
यूनिवर्सिटी बुक हाऊस (प्रा.) लि.
79, चौड़ा रास्ता, जयपुर–302003
फोन: (0141) 2311466, 2313382 फैक्स: 4013697
ई–मेल: uni_bookhouse@yahoo.com

आई.एस.बी.एन : 978-81-8198-454-8

प्रथम संस्करण : 2017

टाईप सेटिंग व मुद्रक
नेहा ग्राफिक एवं थोमप्सन प्रिन्टर्स, नोयडा

All rights reserved. No part of this work may be copied, adapted, abridged or translated, stored in any retrieval system, computer system, photographic or other system or transmitted in any form by any means whether electronic, mechanical, digital, optical, photographic or otherwise without a prior written permission of the copyright holders M/s University Book House (P) Ltd., Jaipur.

This book is sold subject to the condition that it, or any part of it, shall not by way of trade or otherwise, be sold, re-sold, displayed, advertised, or otherwise circulated, without the publisher's prior written consent, in any form of binding, cover of title other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser (s).

Any breach of any of these rights or conditions will entail civil and criminal action without further notice.

While every effort has been made to avoid any mistake or omission, this publication is being sold on the condition and understanding that neither the author nor the publishers or printers would be liable in any manner to any person by reason of any mistake or omission in this publication or for any action taken or omitted to be taken on advice rendered or accepted on the basis of this work.

Rights of Publication reserved with the Publishers.

जीवन एक युद्ध
आन्तरिक बुराइयों, क्रोध,
अधिकारों एवं सम्पत्तियों
आफिस में अपने वजूद के
हैं। अतः जीवन युद्ध नहीं
युद्ध लड़ने पड़ते हैं। इसी
विपत्तियों, आपदाओं से घ
सही मायने में वही पुरुषा
हैं और जीते भी जाते
उनकी औकात दिखाना,
यह कृत्य कायरों का है,
खोजना कायरता है मन
काम है। वीर तो हर परि
खरे निकलते हैं।

भगवान् महावीर
अन्दर के शत्रुओं से ल
विकृतियों एवं दुष्प्रवृत्तियों
तिलक ने कहा था कि
करते थे कि 'अन्याय क
जीवन में अन्याय का वि
कि अधर्म, अनीति को स
भी यही संदेश है। भग
दिया है। जब शांति के
पर पाँच गाँव की मांग
युद्धेन केशवः' अर्थात् हे
पांच गांव तो दूर की ब
बांधने की कोशिश युद्ध
अनीति को बढ़ावा देना
पांचों पाण्डवों तो माने
हैं कि गीता कालजयी
हिंसा प्रधान ग्रन्थ है।